प्राथमिक कक्षाओं में आंकलन के क्षेत्र में उभरती नयी सोच*

एन.सी.ई.आर.टी.

अभी हाल ही में कुछ राज्यों की प्राथमिक कक्षाओं के शिक्षकों से चर्चा के दौरान ज्ञात हुआ कि भारतीय आधुनिक शिक्षा के पाठकों में न केवल शिक्षाविद्, विशेषज्ञ, महाविद्यालयों के प्राध्यापक, शोधकर्ता शामिल हैं वरन् एक बहुत बड़ी सँख्या में स्कूली शिक्षा के प्रत्येक स्तर के शिक्षक इसमें रुचि रखते हैं और इसे चाव से पढ़ते हैं। उनसे ही बातचीत के दौरान पता चला कि उन्हें शिक्षा के क्षेत्र में हाल ही में हुए नये प्रकाशनों के विषय में भी एन.सी.ई.आर.टी. की इन पत्रिकाओं से जो जानकारी मिलती है उसके आधार पर वे उन प्रकाशनों को भी प्राप्त करने तथा पढ़ने का प्रयत्न करते हैं। शिक्षकों में इस तरह की सामग्री को पढ़ने के प्रति रुचि देखकर काफी प्रसन्नता हुई। इस अंक में हम आपको एन.सी.ई.आर.टी. के एक और महत्त्वपूर्ण प्रकाशन की जानकारी दे रहें हैं। यह है-'आंकलन स्त्रोत पुस्तिका' (प्राथमिक कक्षाओं के लिए)।

यहाँ इस लेख में दी जा रही सामग्री एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित आंकलन स्त्रोत पुस्तिकाओं-भाषा (हिंदी और अंग्रेज़ी), पर्यावरण अध्ययन, गणित तथा कला शिक्षा से ली गई है और उसे इस तरह पिरोया गया है कि आपको न केवल इस पुस्तिका की पृष्ठभूमि और उद्देश्यों की जानकारी मिले वरन् आप संक्षेप में यह भी जान सकें कि आंकलन के क्षेत्र में किस प्रकार की नयी सोच उभर कर सामने आई है।

आंकलन स्त्रोत पुस्तिका की पृष्ठभूमि

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 के अनुमोदन के बाद एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा नवीन पुस्तकों का विकास किया गया। नयी पुस्तकें विभिन्न विषयों के पुनः संकलित पाठ्यक्रम पर आधारित ऐसी पुस्तकें हैं जो पूर्णतया एक नवाचारी सोच एवं दृष्टि पर आधारित हैं। नयी पद्धति में विषय आधारित ज्ञान एवं बच्चों के स्वयं सीखने के तरीकों के

*आंकलन स्त्रोत पुस्तिका (प्राथमिक स्तर की कक्षाओं के लिए), भाषा-हिंदी, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली, जनवरी 2009 से साभार प्रकाशित.

प्रति जागरुकता को समाहित करने का प्रयास किया गया है। यद्यपि अध्यापक-प्रशिक्षण में सुधार एक समानांतर प्रक्रिया के रूप में आरंभ किए जा रहे हैं, परीक्षा तथा मूल्याँकन की पारंपरिक प्रणाली में बदलाव की चुनौती एक प्रमुख केंद्र बिंदु के रूप में उभरी है। यह अनुभव किया गया कि सीखने के न्यूनतम अधिगम स्तरों को परिभाषित करने के पूर्व प्रयासों पर पुन: ध्यान देने की आवश्यकता है जिसमें एक समग्र आंकलन नीति को विकसित करने का विचार शामिल हो। ऐसी नीति में व्यक्तिगत विभिन्नताओं एवं उन सामाजिक-सांस्कृतिक बाधाओं पर भी विचार किया जाना चाहिए जो विभिन्न विषयों में बच्चों के सीखने की क्षमता पर प्रभाव ड़ालती हैं।

इसी के मद्देनज़र यह विचार सामने आया कि एक ऐसी स्रोत पुस्तिका बनाई जाए जो अध्यापकों तथा प्रशासकों को बच्चों की प्रगति के आंकलन की एक नयी दृष्टि एवं उपागम प्रदान करने के संकल्प को रेखांकित करे जो अब तक बच्चों को परीक्षण अथवा परीक्षा के आधार पर वर्गीकृत और नामित करने के आदी हो चुके हैं। ऐसी प्रणाली शिक्षकों में यह दृष्टि विकसित करने में बाधाएँ उत्पन्न करती है कि हर बच्चे की प्रगति उसका व्यक्तिगत उपलब्धि पथ है। यह प्रणाली शिक्षकों को सहकारी कक्षा संस्कृति की सीखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका को पहचानने के मार्ग में भी बाधा डालती है। यह स्रोत पुस्तिका इसलिए ही बनाई गई कि यह इस प्रकार की पहचान बनाने में प्रोत्साहन दे तथा प्राथमिक कक्षाओं में अभिलेख रखने की प्रक्रिया सुधारने का साधन भी प्रदान करे। यह आशा की गई कि यह स्रोत पुस्तिका भारतीय शिक्षा की हमारी जटिल प्रणाली के सभी अंगों तथा केंद्रीय सरकार के तत्वधान में संचालित उपक्रमों जैसे केंद्रीय विद्यालय संगठन तथा राज्य सरकारों के अधीन विभिन्न प्रकार के प्राथमिक विद्यालयों का ध्यान आकृष्ट करेगी। सार्वभौमिक शिक्षा प्रणाली की संकल्पना प्रत्येक बच्चे के प्रति धैर्य और समुचित स्नेहपूर्ण व्यवहार पर बल देती है, चाहे उसकी सीखने की शैली और गति कैसी भी क्यों न हो। केवल एक ऐसी प्रणाली जो प्रत्येक बच्चे के प्रति स्नेहिल एवं संवेदनशील है, के द्वारा यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि राष्ट्रीय प्रगति में प्रत्येक नागरिक की सार्थक भागीदारी होगी।

पहली से पाँचवीं कक्षा के लिए आंकलन पर बनी यह स्रोत पुस्तक यूनिसेफ की साझेदारी में तैयार एक सामूहिक अकादमिक प्रयास है। इस स्रोत पुस्तक के लिए भिन्न-भिन्न समूहों का गठन किया गया जिन्होंने कार्यशालाओं की दीर्घ श्रृंखला में आंकलन पर विचारों का व्यापक और गहन मंथन किया। स्रोत पुस्तिका का प्रस्तुत स्वरूप विचार-विमर्श की प्रक्रिया के प्रति आभार व्यक्त करता है। पुस्तक के निर्माण की प्रकिया कई चरणों से होकर गुजरी है जिनमें शिक्षा, मूल्याँकन और अन्य विषयों (discipline) से जुड़े विशेषज्ञों, अध्यापकों, स्वैच्छिक संगठनों के प्रतिनिधियों, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली के अकादमिक सदस्यों और स्कूली शिक्षा से सरोकार रखने वाले बहुत से लोगों ने अपना योगदान किया जिनमें उल्लेखनीय हैं— केंद्रीय समूह (कोर ग्रुप) के सदस्य, राज्यों के शिक्षा सचिव और शिक्षा क्षेत्र से जुड़े अन्य सदस्य,

अलग-अलग राज्यों में सर्व शिक्षा अभियान के राज्य परियोजना कार्यालय तथा राज्यों की राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषदों के सदस्य।

इस प्रकार पाँच विषय क्षेत्रों के लिए स्रोत पुस्तिकाएँ तैयार की गईं और अब पाँचों पुस्तिकाएँ प्रकाशित रूप में उपलब्ध हैं। इनमें से चार स्रोत पुस्तिकाएँ (Arts Education, Environmental Studies, Language—English and Mathematics) अंग्रेज़ी में प्रकाशित हैं तथा एक पुस्तक (भाषा-हिंदी) हिंदी में प्रकाशित है।

स्रोत पुस्तक की ज़रुरत क्यों?

हम सभी बच्चों के बारे में चिंतित हैं। और इसीलिए हम सबका सरोकार इस बात से है कि हर स्कूल एक ऐसी जगह बने जहाँ हर बच्चे को सीखने के मौके मिलें। बच्चों की शिक्षा से जुड़े सभी लोग, विशेषकर अध्यापक इस संबंध में अपने आपको बहुत ही ज़िम्मेदार मानते हैं। ऐसा उनकी इच्छाओं से ज़ाहिर होता है कि वे सभी बच्चों को उनके गुणों और रुचियों के विकास में मदद करने के लिए तत्पर हैं। वे उन्हें विश्वास के साथ अपनी ज़िंदगी का सामना करने के लिए तैयार करना चाहते हैं। अध्यापकों का काफ़ी समय तो इसी बात का पता लगाने में निकल जाता है कि बच्चे स्कूल में कैसा कर पा रहे हैं। बहुत से अध्यापक आंकलन को अपने स्कूल की रोज़मर्रा की महत्त्वपूर्ण गतिविधि के रूप में देखते हैं। अध्यापक विद्यालय में दैनिक आधार पर जो कुछ भी करते हैं, बच्चों का आंकलन उनका एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा बन गया हैं। ऐसा क्यों है?

अध्यापक इसके बहुत से कारण बताते हैं- एक महत्त्वपूर्ण कारण यह जानना है कि बच्चों को जो कुछ भी सीखना चाहिए, क्या वे सीख पा रहे हैं? दूसरी वजह एक अवधि विशेष में बच्चों की प्रगति के बारे में भी जानकारी प्राप्त करना है। जो भी हो तीसरी वजह, जिसको सिर्फ अध्यापक ही नहीं बल्कि हम सभी बहुत ही महत्त्वपूर्ण मानते हैं, वह यह पता लगाना है कि बच्चे की भिन्न-भिन्न विषय/क्षेत्र में क्या उपलब्धियाँ रहीं। ऐसा शायद इसलिए कि हम बच्चों को 'अच्छी क्वालिटी' (गुणवत्ता) वाली शिक्षा देना चाहते हैं और महसूस करतें हैं कि ऐसा तभी संभव हो सकता है जब टेस्ट और परीक्षाओं के ज़रिए पढ़ाए गए विषयों में बच्चों की उपलब्धियों का मूल्याँकन किया जाए।

परीक्षणों (टेस्टों) का अपना एक उद्देश्य है पर यदि हम वास्तव में बच्चों को बेहतर तरीके से सीखने में मदद करना चाहते हैं तो हमें यह बात खास तौर से समझने की ज़रूरत है कि टेस्ट/परीक्षाओं में बच्चे द्वारा प्राप्त किए गए अंक और ग्रेड बच्चों की प्रगति या सीखने के बारे में क्या कुछ विशेष बता पाते हैं।

आइए, आगे दिए गए उदाहरण पर नज़र ड़ालते हैं, एक अध्यापक होने के नाते अपने विद्यालय में इस तरह के हालातों से आपका बहुत बार सामना हुआ होगा।

दुर्भाग्य से हो क्या रहा है कि इस तरह के मूल्यांकन से कुछ बच्चों को असुरक्षा, तनाव, चिंता और अपमान जैसी स्थितियों का सामना करना पड़ता है जैसा कि रमन के साथ भी हुआ। मूल्याँकन से सिर्फ़ यही पता लगता है कि बच्चे क्या नहीं जानते बजाय इसके कि बच्चे क्या जानते

एक प्राथमिक विद्यालय में कक्षा चार के बच्चों को पर्यावरण अध्ययन के अंतर्गत उनकी पाठ्यपुस्तक के जल से संबंधित अध्याय पर आधारित टेस्ट दिया गया। तीस बच्चों में से अधिकतर बच्चों ने 10 में से 6 अंक प्राप्त किए हैं। दो बच्चे जिनमें से मैथिली के आठ और रमन के 10 में से 3 अंक आए हैं। अध्यापक ने कक्षा में जब अंक बताए, तब सभी बच्चे रमन के अंक सुनकर हँसे और उसका मज़ाक भी बनाया क्योंकि उसके अंक सबसे कम थे। उस दिन के बाद से रमन ने कभी नहीं चाहा कि वह स्कूल जाए। उसके माता-पिता के लिए उसे स्कूल जाने के लिए तैयार करना, मनाना बहुत ही कठिन था। ये अंक अध्यापक, माता-पिता या मैथिली और रमन की शिक्षा से सरोकार रखने वाले किसी को भी क्या बताना चाहते हैं? क्या ये अंक यह बता पाएँगे कि दोनों बच्चों ने क्या और कैसे सीखा और वे दोनों क्या-क्या कर सकते हैं? क्या ये अंक अध्यापकों को बता पाएँगे कि मैथिली और रमन की ज़रूरतों के आधार पर उनके लिए अध्यापन और सीखने की प्रक्रिया में कैसे सुधार लाया जाए? क्या ये अंक मैथिली और रमन दोनों बच्चों को उनके सीखने के संबंध में किसी तरह का संकेत दे पाएँगे कि आगे किस तरह का सुधार लाया जा सके? बच्चों द्वारा प्राप्त किए गए अंक क्या किसी भी तरह से उनके माता-पिता या समुदाय के सदस्यों को उनकी प्रगति और सीखने के बारे में कोई उपयोगी रिपोर्ट या पृष्टपोषण (Feedback) दे पाएँगे कि दोनों बच्चों में से कौन क्या जानता है?

हैं और क्या कर सकते हैं? इस तरह का मूल्यांकन पाठ्यपुस्तकों में पढ़ाई गई विषय-वस्तु और रटंत प्रणाली द्वारा प्राप्त की गई जानकारी/ज्ञान का आंकलन करने तक ही केंद्रित है। अधिकांशत: यह बच्चों में तुलना करने जैसा भाव रखता है और अवाँछनीय प्रतिस्पर्धा को जन्म देता है, यहाँ तक कि मात्र आधे अंक के लिए भी क्या अध्यापक होने के नाते हम चाहते हैं कि सभी बच्चे सीखें? यदि ऐसा है तो आंकलन के ज़रिए हम उनमें क्या खोजते हैं?

आप इस सच्चाई को तो ज़रूर स्वीकार करेंगे कि इस तरह कि स्थितियाँ विद्यालयों में अकसर देखी जाती हैं। स्थितियाँ कुछ महत्त्वपूर्ण सवालों की तरफ हमारा ध्यान खींचती हैं — हम वास्तव में किस चीज का आंकलन कर रहे हैं? क्या टेस्टों/परीक्षाओं के अतिरिक्त बच्चों का आंकलन करने के कुछ और भी तरीके हो सकते हैं? क्या अंकों और ग्रेड के रूप में रिपोर्ट करना पर्याप्त है? आंकलन संबंधी सूचनाएँ किस तरह की मदद करती हैं? हम अपने काम को कठिन बनाए बगैर बच्चों के सीखने के बारे में किस तरह की सूचनाएँ इकट्ठी कर सकते हैं? आखिरी सवाल बहुत ही महत्त्वपूर्ण है क्योंकि पूरे देश भर में अध्यापक रोज़ाना ही बहुत-सी समस्याओं का सामना करते हैं जैसे- विद्यार्थियों की अधिक सँख्या, एक साथ दो-तीन या कभी-कभी तो इससे भी अधिक कक्षाओं को एक साथ बैठाकर पढ़ाना, भरी कक्षाएँ और विद्यालय में सुविधाओं का अभाव। इसके साथ-साथ उन्हें ऐसे बच्चों को पढ़ाना होता है जो भिन्न-भिन्न पृष्ठभूमि से आते हैं। भिन्न-भिन्न भाषाएँ बोलते हैं। और जिनकी विशेष आवश्यकताएँ भी होती हैं। अध्यापकों और उन सभी में, जो चाहते हैं कि बच्चे अपनी अधिकतम योग्यता के अनुसार सीखें, अधिक समय, धैर्य और समझ की ज़रूरत है। इस तरह की स्थितियों में अध्यापकों की मदद किस तरह से की जा सकती है?

इस स्रोत पुस्तक में अध्यापकों द्वारा अकसर पूछे जाने वाले प्रश्नों (जो ऊपर भी दिए गए हैं), का उत्तर देने की कोशिश की गई है। यह अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया को बच्चों के आंकलन के अभिन्न अंग के रूप में देखते हुए इस प्रक्रिया को आसान बनाती है और इसके लिए यह उन सभी अध्यापकों के समक्ष बहुत से विचार तथा तरह-तरह के विकल्प प्रस्तुत करती है जो आंकलन के भिन्न-भिन्न पहलुओं से संबंधित निर्णय लेते हैं। वे पहलू कौन-से हैं? महत्त्वपूर्ण पहलू इस प्रकार हैं-

- बच्चों का आंकलन क्यों किया जाना चाहिए?
- किस बात का आंकलन करना चाहिए?
- आंकलन कब करना चाहिए?
- आंकलन कैसे किया जाना चाहिए?
- आंकलन द्वारा प्राप्त सूचनाओं का उपयोग किस तरह करना चाहिए?

बच्चों का आंकलन क्यों किया जाना चाहिए?

हम सभी बच्चों के सीखने और अच्छी शिक्षा पाने को लेकर चिंतित हैं। प्राथमिक कक्षाओं में आंकलन क्यों किया जाना चाहिए इसके बहुत से कारण हैं। हम कुछ मुख्य कार्यों पर नज़र डालते हैं। इनमें से कुछ आप पहले से ही जानते होंगे और कुछ तो सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान इस्तेमाल भी करते होंगे। कुछ महत्त्वपूर्ण कार्य हैं-

- भिन्न-भिन्न विषयों में समय की एक अवधि विशेष में बच्चे की प्रगति और उसमें आने वाले परिवर्तनों का पता लगाना,
- बच्चे की व्यक्तिगत और विशेष ज़रूरतों को पहचानना,
- अधिक उपयुक्त तरीकों के आधार पर अधयापन और सीखने की स्थितियों की योजना बनाना,
- कोई बच्ची क्या कर सकती है और क्या नहीं, उसकी किन चीज़ों में विशेष रुचि है, वह क्या करना चाहती है और क्या नहीं, इन सबके प्रति समझ बनाने और महसूस करने में बच्ची की मदद करना,
- बच्ची को 'कुछ प्राप्त कर पाने' पूर्णता की भावना के विकास के लिए प्रोत्साहित करना,
- कक्षा में चल रही सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को बेहतर बनाना,
- बच्ची की प्रगति के प्रमाण तय कर पाना जिन्हें अभिभावकों और दूसरों तक संप्रेशित किया जा सके,
- बच्चों में आंकलन के प्रति व्याप्त भय को दूर करना और उन्हें स्व-आंकलन के लिए प्रोत्साहित करना,
- प्रत्येक बच्ची/बच्चे के सीखने और विकास में मदद करना और सुधार की संभावनाएँ खोजना ।

किसका/किस बारे में आंकलन किया जाना चाहिए ?

आंकलन के संबंध में उठाए गए सवालों जैसे- 'बच्चों का आंकलन क्यों किया जाना चाहिए' के बाद स्वाभाविक है कि बहुत से अध्यापक सवाल करें...

आंकलन किस बारे में किया जाना चाहिए? हमें अपने आप से सवाल करने की ज़रूरत है कि

आखिर वह है क्या जिसकी हमें बच्चों का आंकलन करते समय तलाश रहती है। चूँकि शिक्षा बच्चे के कुल समग्र विकास से जुड़ी हुई है (जैसे-शारीरिक, सामाजिक, भावात्मक और संज्ञानात्मक) इसलिए यह ज़रूरी है कि सभी पहलुओं का आंकलन किया जाए, सिर्फ अकादमिक उपलब्धियों का नहीं, जो वर्तमान में विद्यालयों में इस्तेमाल की जा रही आंकलन पद्धतियों का मुख्य केंद्र है। इस प्रकार यह बहुत आवश्यक हो जाता है कि विद्यालय और कक्षा के बाहर और भीतर होने वाली सभी गतिविधियों, जिनमें बच्चे की भागीदारी रहती है, का आंकलन किया जाना चाहिए? यह आंकलन की सारगर्भित प्रक्रिया होगी। आंकलन की प्रक्रिया को सूचना और पृष्ठ पोषण देने का ज़रिया बनाना होगा कि विद्यालय और अध्यापक शिक्षा देने की प्रक्रिया में किस सीमा तक सफल हो पाए हैं। बच्चे के अधिगम की पूरी तस्वीर समझने के लिए आंकलन द्वारा निम्नलिखित बिंदुओं को उभारना होगा-

- भिन्न-भिन्न विषयों/क्षेत्रों में बच्चों का सीखना और प्रदर्शन,
- बच्चों के कौशल, रुचियाँ, रुझान और अभिप्रेरणा कुछ और पहलू हैं,
- एक निश्चित अवधि में बच्चों को सीखने और व्यवहार में होने वाले परिवर्तन,
- विद्यालय के भीतर और बाहर मौजूद भिन्न-भिन्न स्थितियों और अवसरों के प्रति बच्चों की प्रतिक्रिया।

आंकलन कब किया जाना चाहिए ?

हममें से बहुतों द्वारा पूछा गया एक बहुत ही अहम् सवाल 'आंकलन किस बात का किया जाए' से जुड़ा हुआ एक ही सवाल है- बच्चों के सीखने की प्रक्रिया और प्रगति को कब और कैसे आँका जाए? सीखने के परिणामों का आंकलन अध्यापन अधिगम प्रक्रिया के साथ सतत् रूप से जुड़ा हुआ है। समग्र रूप से आंकलन करने के लिए, सीखने के सभी पहलुओं को अपेक्षित पहचान देनी होगी। इस तरह से तो प्रत्येक बच्चे का प्रोफाइल बनाना ज़रूरी हो जाता है हालाँकि तरीके और पद्धतियाँ तो भिन्न-भिन्न होंगी ही। जब अध्यापक नियमित रूप से बच्चों की प्रगति पर बराबर नजर बनाए हुए हों तो उस पर प्रतिक्रिया करने, पृष्टपोषण देने और सुधार संबंधी तरीकों को अपनाने के लिए कुछ अवधियाँ तो तय करनी होंगी। इसके लिए ज़रूरी है कि व्यावहारिक अवधियाँ तय की जाए और उनका अनुसरण किया जाए। हालाँकि कक्षा में अनौपचारिक रूप से अवलोकन की प्रक्रिया तो चलती रहनी चाहिए। हर पंद्रह दिन में एक बार पीछे मुड़कर देख लेना (बच्चे के शुरुआती दौर को) और पारदर्शित समीक्षा भी कर लेना ज़रूरी होगा। इससे बच्चों के सीखने को उन्नत और सुदृढ़ किया जा सकता है। अत: आंकलन—

- दिन-प्रतिदिन के आधार पर— बच्चों के साथ सतत् रूप से अंत:क्रिया करना और सतत् रूप से उनका कक्षा और कक्षा के भीतर और बाहर आंकलन करना।
- सावधिक— हर तीन या चार महीनें में एक बार अध्यापक बच्चों के कामों की जाँच करें और एकत्र की गई सूचनाओं के आधार पर उन्हें अपनी राय बताएँ। यह किसी प्रकार की जाँच के रूप में नहीं होना चाहिए।

आंकलन कैसे किया जाए?

विभिन्न चरण और विधियाँ जो कि चक्रीय एवं क्रमिक हैं विस्तार से आगे दी गई हैं -

पहला चरण

भिन्न भिन्न स्रोतों और विधियों द्वारा सूचना और प्रमाण जुटाना

यदि हम सभी यह स्वीकार करते हैं और मानते भी हैं कि सभी बच्चे अपनी ही शैली से सीखते हैं और वे सिर्फ़ स्कूल में ही नहीं सीखते तब हमें बच्चों का आंकलन करते समय दो चीज़ों पर तो काम करना ही होगा- पहला, तरह-तरह के स्रोतों से जानकारी इकट्ठी करना, दूसरा, तरह-तरह की गतिविधियाँ, अनुभवों और अधिगम कार्यकलापों से जुड़े बच्चे क्या वास्तव में सीख रहे हैं, यह जानने और समझने के लिए आंकलन की बहुत सी विधियाँ इस्तेमाल में लाना।

सूचनाओं के स्रोत

आज भी यही देखने में आता है कि अध्यापक ही सूचनाओं का मुख्य स्रोत है और यही वह व्यक्ति है जो बच्चों के सीखने का आंकलन भी करता है। जो भी हो, चूँकि आंकलन सीखने की प्रक्रिया का ही हिस्सा है, बच्चे स्वयं भी अपने अधिगम और प्रगति का आंकलन करने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अध्यापक बच्चों का स्वयं का आंकलन करने में मदद कर सकते हैं।

बच्चों से क्या अपेक्षा की जा रही है, इसकी बेहतर समझ विकसित करने में मदद की जा सकती है, अपने काम और प्रदर्शन को आलोचनात्मक नज़रिए से देखने के लिए अनुभव प्रदान किए जा सकते हैं। बच्चों से यह भी कहा जा सकता है कि वे अपने उन कामों का चयन करें जो उनकी नज़र में सर्वोत्तम हैं और यह भी बताएँ कि उन्होंने इनका चयन क्यों किया। बच्चों के अतिरिक्त क्या कोई और भी है जिनसे बच्चों के आंकलन के संबंध में सूचनाएँ ली जा सकती हैं? बच्चों के विकास के दूसरे पहलुओं की पूरी तस्वीर स्पष्ट करने के लिए इन्हें भी आंकलन की प्रक्रिया में शामिल किया जा सकता है। वे कौन हो सकते हैं? अध्यापक और भी बहुत से व्यक्तियों के साथ बातचीत कर उन्हें आंकलन की प्रक्रिया में शामिल कर सकते हैं, वे व्यक्ति हो सकते हैं -

- माता-पिता/अभिभावक
- बच्चों के मित्र/सहपाठी
- दूसरे अध्यापक
- समुदाय के लोग

अब अगला सवाल यह उठता है कि भिन्न-भिन्न स्रोतों से सूचना इकट्ठी कैसे की जाए?

आंकलन के तरीके

किसी भी तरीके को चुनने से पहले प्राप्त की जाने वाली ज़रूरी सूचनाओं के लिए आंकलन के प्रकार का निर्धारण आवश्यक है। आंकलन करने के चार मूलभूत तरीके हैं-

- *व्यक्तिगत आंकलन*-एक बच्चे को केंद्र में रखते हुए किया गया आंकलन जब वह कोई गतिविधि/कार्य करता है और उसे पूर्ण करता है।
- *सामूहिक आंकलन*-किसी कार्य को पूर्ण करने के उद्देश्य से बच्चों द्वारा, सामूहिक रूप से कार्य करते समय सीखने और

प्रगति का आंकलन सामूहिक आंकलन है। आंकलन का यह तरीका बच्चों के सामूहिक कौशलों, सहयोग द्वारा सीखने की प्रक्रिया तथा बच्चों के व्यवहार से संबंधित अन्य मूल्यों के आंकलन के लिए बहुत उपयुक्त पाया गया है।

- *स्व-आंकलन*-बच्चे द्वारा स्वयं के सीखने तथा ज्ञान, कौशल, प्रक्रियाओं, रूचि, व्यवहार आदि में प्रगति के स्व-आंकलन से संबंधित है।
- *सहपाठियों द्वारा आंकलन*-एक बच्चे द्वारा दूसरे बच्चे का आंकलन, इसे दो बच्चों की जोड़ी या समूह में करवाया जा सकता है।

सभी स्कूलों में अध्यापकों द्वारा तैयार किए गए उपकरणों/तकनीकों के इस्तेमाल का ही प्रचलन है । इसमें पेपर, पैंसिल, टेस्ट/कार्यकलाप, लिखित और मौखिक परीक्षाएँ, तस्वीर आधारित सवाल, कृत्रिम (सिमुलेटेड) कार्यकलाप और विद्यार्थियों के साथ वार्तालाप/संवाद शामिल हैं। अध्यापकों द्वारा बच्चों के सीखने की प्रगति का आंकलन करने के लिए छोटे-छोटे क्लास टेस्टों का इस्तेमाल एक आसान और शीघ्रगामी तरीके के रूप में किया जाता है।

सामान्यत: एक अवधि विशेष में पढ़ाई गई निर्धारित विषय-वस्तु के आधार पर सत्र या माह के अंत में ये टेस्ट करवाए जाते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि ये उपयोगी होते हैं परंतु इनका इस्तेमाल बहुत सावधानी के साथ किया जाना चाहिए। इस तरह के परीक्षणों में पूछे जाने वाले सवालों की प्रकृति ऐसी न हो कि उनसे पूर्व-निर्धारित उत्तर ही निकल कर आते हों अपितु इन प्रश्नों की शब्द संरचना इस तरह की हो कि बच्चों को अपने विचार और भाव तरह-तरह से अभिव्यक्त करने की पूरी गुंजाइश हो। टेस्ट में दी जाने वाली प्रविष्टियाँ/प्रश्न कुछ इस प्रकार के हों कि वे चिंतन और विश्लेषण पर बल दें न कि पाठ्यपुस्तकों में दी गई सामग्री को याद करके पुन: लिख देने पर। क्या आपने कभी सोचा है कि तरह-तरह की विधियों का इस्तेमाल क्यों करना चाहिए? ऐसा इस वजह से किया जाता है-

- भिन्न-भिन्न विषयों, क्षेत्रों और विकास के भिन्न-भिन्न पहलुओं में सीखने का आंकलन किया जाता है।
- बच्चे एक विधि की तुलना में किसी दूसरी विधि के प्रति बेहतर तरीके से प्रतिक्रिया करते हैं।
- सीखने के संबंध में अध्यापकों की समझ बनाने में हर विधि का अपनी ही तरह से योगदान रहता है।

विकास के भिन्न भिन्न क्षेत्रों में बच्चों की प्रगति और अधिगम के बारे में सूचनाएँ और प्रमाण जुटाने के लिए आंकलन का कोई भी एक उपकरण या विधि अपने आप में पर्याप्त नहीं है। पढ़ाते समय आपने ज़रूर महसूस किया होगा कि विद्यार्थियों का अवलोकन करके, उन्हें सुनकर, उनके अभिभावकों, दोस्तों को और दूसरे अध्यापकों के साथ उनके बारे में अनौपचारिक तरीके से चर्चा करके, उनके लिखित कार्य (कक्षा तथा गृहकार्य दोनों ही), बच्चों द्वारा लिखे गए लेखों और उनके स्व-आंकलन के आधार पर बहुत कुछ समझा जा सकता है ।

आंकलन के कुछ साधन

- **परियोजना कार्य**
- **भ्रमण**
- **व्यक्तिगत रूप से प्रस्तुतीकरण**
- **जोड़ी में काम**
- **लिखित कार्य**
- **फोलियों दर्ज करना**

इन साधनों के अतिरिक्त तस्वीरों और श्रव्य-दृश्य रिकार्डिंग का भी इस्तेमाल किया जा सकता है। ये बच्चे के कार्य करते समय के अनुभवों का ही नहीं बल्कि कार्यपूर्ति का प्रलेखन प्रदान करते हैं। इसमें एक समयावधि में प्रक्रिया को ध्यान में रखते हुए आंकलन किया जाता है। दोनों ही घटनाओं की सटीक पुनरावृत्ति तथा बच्चे के सोचने तथा संवाद के तरीकों को सही ढंग से परखने में सहायक हैं। बच्चों और अभिभावकों दोनों के साथ अनुभव बाँटने में भी इनसे मदद मिलती है। आंकलन के ये तरीके महँगे हैं, इनके लिए तकनीकी विशेषज्ञों की आवश्यकता पड़ती है। समय अधिक लगता है तथा विश्लेषण अधिक समय की माँग करता है। इसलिए इनके इस्तेमाल में बहुत सावधानी की आवश्यकता है।

दूसरा चरण

सूचनाओं को दर्ज़ करना या सूचनाओं की रिकॉर्डिंग करना

पूरे देश के सभी विद्यालयों में रिपोर्ट कार्ड का इस्तेमाल रिकार्डिंग का सर्वाधिक प्रचलित तरीका है। अधिकतर रिपोर्ट कार्डों में बच्चों द्वारा टेस्ट/परीक्षाओं में प्राप्त किए अंकों और ग्रेडों (श्रेणियों) के रूप में सूचनाएँ दर्ज होती हैं। अंकों और ग्रेडों की उपयोगिता तथा निहितार्थ के बारे में पहले ही चर्चा की जा चुकी है। महत्त्वपूर्ण प्रश्न यह उठता है कि दर्ज करने (रिकार्ड रखने) की प्रक्रिया में सुधार लाने के लिए क्या किया जा सकता है। कक्षा में किया गया वार्तालाप बच्चे के व्यवहार तथा सीखने का अवलोकन करने के लिए अनेकानेक अवसर प्रदान करता है। जैसा कि आप जानते हैं कक्षा में नित्य शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के दौरान अनौपचारिक रूप से कुछ अवलोकन किए जा सकते हैं। दिन-प्रतिदिन के अवलोकनों को अगर दर्ज नहीं किया जाए तो शीघ्र ही उनके भूलने की आशंका रहती है। बच्चों के कार्यों/गतिविधियों के कई अवलोकन सुनियोजित होते हैं। इस प्रकार के अवलोकन किसी उद्देश्य से योजनाबद्ध होते हैं और इसीलिए स्वरूप में औपचारिक होते हैं।

बच्चे के सीखने और प्रगति की पूरी तस्वीर देने के लिए इसके क्षेत्र को विस्तृत करने की आवश्यकता है। रिकॉर्डिंग में बच्चों द्वारा किए गए कार्यों/प्रदत्त कार्यों में उनकी प्रस्तुति के अवलोकन तथा उन पर की गई टिप्पणियों — बच्चे क्या करते हैं, उनका व्यवहार कैसा है की रेटिंग, बच्चों के दूसरों के साथ व्यवहार की घटनाओं को सम्मिलित करने की आवश्यकता है।

संभावनाओं के विस्तार की ज़रूरत है, जिसके अंतर्गत शामिल हो सकते हैं— अवलोकनों के रिकॉर्ड, किसी कार्यकलाप या प्रदत्त कार्य में बच्चों के प्रदर्शन पर टिप्पणियाँ, बच्चे क्या करते हैं और कैसे करते हैं, के बारे में श्रेणियाँ बनाना, दूसरों के साथ बच्चों के व्यवहार से जुड़ी घटनाएँ और

वर्णन। यदि आप कर सकें तो नीचे लिखे बिंदुओं से भी आपको मदद मिलेगी—

- बच्चों का अवलोकन करने के बाद तुरंत ही अवलोकनों को दर्ज़ करें।
- कला और शिल्पकारी, जिनको बहुत अधिक महत्त्व नहीं दिया जाता, के क्षेत्र में बच्चों के काम और प्रदर्शन के नमूनों का संग्रह करें।
- गुणात्मक टिप्पणियाँ लिखने के बारे में विचार करें।

यह भी बहुत महत्त्वपूर्ण है कि जिन सूचनाओं का संग्रह किया गया है, उन्हें अच्छी तरह से समझा जाए और उत्तरों की विभिन्नता तथा विविधता को प्रोत्साहित किया जाए और उसकी सराहना की जाए। इस संबंध में बहुत-से उदाहरण और दृष्टांत दिए गए हैं।

तीसरा चरण

एकत्रित सूचनाओं से अर्थ निकालना

एक बार सूचनाएँ दर्ज़ कर ली जाएँ फिर तीसरा महत्त्वपूर्ण पहलू या अगला चरण है — उपलब्ध साक्ष्यों की मदद से एक समझ बना पाना कि क्या सूचनाएँ इकट्ठी की गई और दर्ज़ की गई और फिर बच्चे के सीखने तथा प्रगति के बारे में निष्कर्ष निकालना। 'बच्चे की प्रगति कैसी है' और बच्चे की मदद के लिए क्या किया जाना चाहिए, यह समझने के लिए रिकॉर्डिंग बहुत ज़रूरी है। इसके लिए ज़रूरी है कि बच्चे के संबंध में दर्ज किए गए रिकार्डों का नियमित रूप से विश्लेषण किया जाए और समीक्षा भी। साथ ही संग्रहीत सूचनाओं के प्रति सावधिक प्रतिक्रिया भी दी जाए। ये सभी प्रक्रियाएँ शिक्षक को भी बहुत तरह से मदद करेंगी जैसे- अपनी शिक्षण पद्धतियों, कक्षा प्रबंध सभी शिक्षण शास्त्रीय पहलुओं के साथ-साथ सामग्री का प्रयोग जैसे प्रक्रियाओं के प्रति चिंतन करना और शिक्षार्थी के लाभार्थ, इन सभी में आवश्यक सुधार करना। इस स्रोत पुस्तक के बाद के अध्यायों में प्रत्येक विषय क्षेत्र के लिए संकेतक दिए गए हैं। ये संकेतक प्रत्येक कक्षा/स्तर के लिए दिए गए हैं। ये संकेतक यूँ ही नहीं बना लिए गए हैं अपितु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 पर आधारित एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्राथमिक स्तर के लिए बनाए गए पाठ्यक्रम में दिए गए प्रत्येक अधिगम क्षेत्र के लिए सीखने के उद्देश्यों को ध्यान में रखकर बनाए गए हैं। इन संकेतकों को संदर्भ बिंदु के रूप में प्रस्तुत किया गया है। *आप अपने राज्य के पाठ्यक्रम और स्थानीय ज़रुरतों के अनुसार इन्हें ज्यों का त्यों आवश्यक परिवर्तनों के साथ इस्तेमाल कर सकते हैं।*

संकेतक महत्त्वपूर्ण क्यों हैं?

दिए गए संकेतक अध्यापक की कई तरह से मदद कर सकते हैं—

- सीखने की निरंतरता को ध्यान में रखते हुए बच्चे के सीखने की बेहतर समझ और उसे केंद्र में रखना।
- पर्यवेक्षण, अधिगम और प्रगति को रिपोर्ट करने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करते हैं।
- अभिभावकों, बच्चों और कई दूसरों के लिए भी बच्चों की प्रगति को आसान तरीके से समझने के लिए संदर्भ बिंदु की तरह कार्य करते हैं ।

यह बहुत ही महत्त्वपूर्ण है कि सूचनाएँ जो एकत्रित की गई हैं, आँकड़ों और प्रमाणों के संग्रह के बाद भी सूचनाओं का संग्रह करना जारी रहना चाहिए। इन संकेतकों के आधार पर गुणात्मक टिप्पणियाँ भी तैयार की जा सकती हैं — एक दिए गए उत्तर के प्रति यह कितना उपयुक्त है — स्वीकार्य, महत्त्वपूर्ण और रुचिकर। बहुधा यह देखा जाता है कि शिक्षार्थी को 'अ' या 'ब' के द्वारा उसके उत्तर/प्रतिक्रिया को चिह्नित किया जाता है। शिक्षार्थी के साथ किसी भी तरह की अंत:क्रिया किए बगैर। यह बहुत ही आवश्यक विधियों में प्रयोग करें।

- सूचना एकत्र करने की प्रक्रिया सतत् रहे और सूचनाओं को दर्ज भी करते चलें।
- प्रत्येक बच्चे को प्रतिक्रिया करने, सीखने और अपना ही समय लेने को महत्त्व दें।
- एक सतत् प्रक्रिया के रूप में रिपोर्टिंग भी करें और प्रत्येक बच्चे की प्रतिक्रिया/उत्तर के प्रति सरोकार रखें।
- पृष्टपोषण दें, जो सकारात्मक क्रियाओं के लिए संभावनाएँ जुटाएँ और बच्चे को बेहतर करने के लिए मदद दें।

यहाँ पर प्रस्तुत आंकलन संबंधी सामग्री का उद्देश्य विद्यालयी शिक्षक को प्राथमिक कक्षाओं में आंकलन के क्षेत्र में उभरती नयी सोच के बारे में जानकारी प्रदान करना है। अलग-अलग विषय क्षेत्र में आंकलन का क्या स्वरूप है इसका विस्तृत विवरण एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित अलग-अलग विषय की आंकलन स्त्रोत पुस्तिकाओं में उपलब्ध है। आशा है यह जानकारी शिक्षक और शिक्षक-प्रशिक्षकों के लिए उपयोगी सिद्ध होंगी।